A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

बड़ौदा संस्थान में शहनाई साहित्य और शहनाई परंपरा का अध्ययन

Shri Jay Shinde[1], Dr. Vishwas Sant[2]

1 Research Scholar & associated professors, Dept. of Inst. Music, Faculty of Performing Arts, MSU Baroda
2 Guide/Head, Dept. of Inst. Music, Faculty of Performing Arts, MSU Baroda

Read the Article Online

OPEN ACCESS CC BY

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Shinde, S.J., Sant, V. (2026). Badouda Sansthan me Shehnai Sahitya aur Shehnai Parampar ka Adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 428-432.

सार

'बड़ौदा संस्थान' (बड़ौदा रियासत) में शहनाई की एक परंपरा थी जो दरबारी कार्य के लिए मशहूर थी। बड़ौदा नरेश सर सायजीराव गायकवाड के परिवार भी शहनाई वाद्य को, उच्च सन्मान देते था। गायकवाड परिवार ने शहनाई को, भारतीय संगीत शिक्षा के प्रवाह में प्रवेश करवाने वाले भारत के प्रथम व्यक्ति माने जाते है। पं.गणपतराव वसईकर ने शहनाई शिक्षा के लिए 'सनई वादन पाठशाला' शुरू की साथ ही "सनई वादन पाठमाला' (भाग 1 से 4) का पुस्तक का प्रकाशन किया। यह पुस्तक भारत वर्ष में शहनाई वाद्य की प्रथम पूस्तक मानी जाती है। सर सायजीराव ने शहनाई शिक्षा के लिए पंडित गणपतराव वसईकरजी को महाराष्ट्र से बुलाकर राज्याश्रय दिया ओर बड़ौदा में शहनाई शिक्षा की नीव रखी ओर कालक्रम में वह शिक्षा, शहनाई वाद्य की परंपरा बनी। पंडित वसईकर जी की शहनाई की यह परंपरा, आज भी वर्तमान काल में बड़ौदा में जीवित है।

मुख्य शब्द: *शहनाई, बदौदा संस्थान, शहनाई परंपरा, पंडित वसईकर।*

परिचय

'बड़ौदा संस्थान में शहनाई साहित्य ओर शहनाई परंपरा – एक संक्षिप्त अध्ययन' मेरे पेपर का शीर्षक है। इस शीर्षक में मुख्य दो बिंदु उभरकर आते है। (1) शहनाई साहित्य (2) शहनाई परंपरा । बड़ौदा संस्थान कला और सांस्कृती के विकास परंपरा और संरक्षण का मुख्य घटक रहा है। शहनाई विषय में बड़ौदा संस्थान में कई उल्लेख नीय कार्य किए गए है। प्राचीन काल से शहनाई सनातन धर्म, लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का प्रमुख अंग माना गया है। शहनाई वाद्य के विकास में बड़ौदा संस्थान का स्थान प्रमुख माना गया है। शहनाई के साहित्य ने शहनाई के विकास, प्रचार-प्रसार, साहित्य, वादन प्रस्तुति, एवं शहनाई परंपरा को विकसित करने में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। शहनाई जैसे वाद्य को भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रवाह में योग्य स्थान दिलाने का श्रेय बड़ौदा संस्थान को दिया जाता है। शहनाई के प्रथम साहित्य ने शहनाई की परंपरा विकसित करने में महत्व पुर्ण स्थान अर्जित किया है।

साहित्य की समीक्षा

इस पेपर के प्रमुख साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट ओर सटीक संकेत मिलते है की, बड़ौदा संस्थान की शहनाई साहित्य और शहनाई परंपरा के विकास में सर सयाजीराव गायकवाड, पंडित वसईकर, उस्ताद मौलाबक्ष तथा पंडित भातखंडेजी का योगदान महत्वपूर्ण माना गया है। डॉ. विश्वास संत के शोध-ग्रंथ से शहनाई परंपरा एवं बड़ौदा संस्थान में शहनाई वाद्य के प्रमाणभूत स्रोत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कमलेश कुमार आनंद के शोध-ग्रंथ ने शहनाई की भूमिका का योग्य साहित्य वर्णन मिलता है। शहनाई वाद्य विकास में बड़ौदा संस्थान का योगदान, पिछले 100 वर्षों से वर्तमान युग तक निरंतर प्रवाहित स्वरूप में, गंगा के पानी की तरह अखूट रूप में प्रवाहित सा महसूस होता दिखाई देता है।

अनुसंधान पद्धति

इस पेपर में प्राथमिक स्रोतों को प्रथम प्रयोग में लाया गया है। अन्य स्रोतों में शहनाई के पुस्तक सनई वादन पाठमाला, शोध-पत्र, अखबार आदि का सहारा लिया गया है। इस पेपर में शहनाई वादक के साथ साक्षात्कार द्वार मौखिक परंपरा से जानकारी भी जुटाई गई है। इस अनुसंधान पद्धति में बड़ौदा संस्थान, शहनाई साहित्य ओर शहनाई परंपरा को आलेखित किया गया हैं। इस पेपर के लेखक खुद शहनाई की इस परंपरा के वाहक के रूप कार्य कर रहै है।

बड़ौदा – "बड़ौदा संस्थान", शहनाई कला का विकास, प्रचार-प्रसार ओर शहनाई परंपरा का मुख्य स्रोत माना जाता है। बड़ौदा में शहनाई साहित्य ओर शहनाई परंपरा की नीव गायकवाड परिवार के नरेश सर सायजीराव गायकवाड एवं पंडित गणपतराव पिराजी वसईकर रखी थी। बड़ौदा के ज्यादातर नरेश, संगीत प्रेमी तथा कला-प्रेमी रहे है। 'बड़ौदा संस्थान' का सांगीतिक इतिहास 200 वर्ष का मानाजाता है। इन दो शतक की परंपरा से

A Pratibha Spandan Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

बड़ौदा को, कलानगरी ओर संस्कारी नगरी का बिरुद प्राप्त हुआ है। भारत की सभी रियासतों में, शहनाई वाद्य को उतना मान-सन्मान नहीं मिला, जितना मान–सन्मान "बड़ौदा संस्थान" के गायकवाड परिवार ने दिया है। बड़ौदा नरेश सायाजीराव गायकवाड द्वितीय, संगीत कला के शोखिन थे। कहाँ जाता है की बड़ौदा नरेश सयाजीराव द्वितीय ने "कलावंत कारखाना" (मनोरंजन विभाग) की स्थापना की।[1] 'कलावंत कारखाना" याने मनोरंजन विभाग, जिसके अंतर्गत गायक-वादक-नृत्यकार, माइम, पहेलवाँ, जादूगर, इत्यादि कलावंतों की नियुक्ति की जाती थी।[2] इस 'कलावंत कारखाने में, सभी उच्च प्रकारों के सिद्ध ओर भारत वर्ष के नामी कलाकारों का समावेश किया गया था। जिसमें उस्ताद मौलबक्ष, उस्ताद फ़ैयाज खां, पंडित वसईकर आदि प्रमुख नाम है। गायकवाड के दरबार में 'सगीत कला की प्रस्तुति, आमतौर पर होती रहती थी। गायकवाड दरबार में प्रमुख वाद्य शहनाई रहां है। आम प्रजाजनों को कीर्ति मंदिर, बैंड स्टेंड, लहेरीपुर दरवाजा, न्याय मंदिर आदि धार्मिक स्थल पर तथा मंदिरों में संगीत प्रस्तुत किया जाता था। इन संगीत प्रस्तुति की शुरुआत हमेशा, शहनाई वादन से होती थी।

बड़ौदा दरबार का संगीत ओर शहनाई, आम प्रजा या जनमानस तक पहुचाने तथा संगीत को समाज उपयोगी बनाने हेतु, 'गायन शाला' की स्थापना गई थी। जिनमें उस्ताद मौलबक्ष तथा सर सयाजीराव (तृतीय) की मुख्य भूमिका रही। सन् 1914 में शहनाई वादक पंडित गणपतराव वसईकर जी के सहयोग से, सर सयाजीराव की कृपया द्रष्टि से शहनाई वाद्य के लिए "शहनाई वादन पाठशाला" की स्थापना की गई। सर सयाजीराव, भारत के प्रथम नरेश थे, जिन्होंने सनातन धर्म ओर मराठी परंपरा अनुसार, प्राचीन वाद्य शहनाई को शिक्षा पद्धति अंतर्गत स्थान दिया।

'शहनाई' वाद्य सुषिर वर्ग श्रेणी का प्राचीन ओर प्रचलित वाद्य मानाजाता है। भारत वर्ष में, प्राचीन काल से आधुनिक काल तक, हर शुभ तथा धार्मिक प्रसंगों पर, हमें एक वाद्य सुनाई देता है, वह हैं शहनाई वाद्य। शहनाई उत्तर भारत का प्रमुख सुषिर वाद्य मानाजाता है। शहनाई वादन कला उत्तर भारत की सबसे प्राचीन कला मानी गई है। उत्तर भारत में शहनाई वाद्य को प्रांतीय नामों से पुकार जाता है। पंडित शारंगदेव ने 'संगीत रत्नाकर' के 6वे अध्याय 'वाद्य-अध्याय' में, 'मधूकरी' नामक वाद्य का उल्लेख किया है। मधूकरी, शहनाई वाद्य के समान मानी गई है।[3]

'बड़ौदा संस्थान' में पहले भी शहनाई का वादन प्रयोग होता था। लेकिन सन् 1914 में पंडित गणपतराव पिराजी (वसईकर) जो वसई गाँव, महाराष्ट्र के वतनी थे। भारत की कई मुख्य रियासतों में जैसे इंदोर, ग्वालियर आदि कई रियासतों में शहनाई वादन किया ओर साथ मान-सम्मान, धन, वस्त्र आदि शहनाई वादन करके प्राप्त किया था। उस समय के कीर्तिमान शहनाई वादक में आपकी गणना होती थी। सर सयाजीराव नरेश ने आपको बड़ौदा दरबार में स्थान दिया ओर साथ राज्याश्रय दिया। साथ साथ आपको कई सम्मान के साथ एक पदक, धन, आदि से द्वारा सम्मानित किया गया। [4] सन् 1939 में सर सयाजीराव गायकवाड ने आपको 'कला ज्योति' अवॉर्ड से आपको सम्मानित किया गया था।[5]

पंडित गणपतराव वसईकर जी का जन्म 30 ऑक्टोबर 1863 में महाराष्ट्र के वसई गाँव के अरनाली गाँव में हुआ था। आपको दरबारी संगीतकार के तौर पर नियुक्त किया गया था एवं शहनाई वादन पाठशाला में शहनाई शिक्षक के तौर पर नियुक्त किया गया था। शहनाई वाद्य शिक्षा के लिए यह कार्य किसी अजूबे से कम नहीं था। 19वि शताब्दी में शहनाई की वर्ग-शिक्षा देने का सफल प्रयोग किया गया ओर शहनाई वाद्य के इतिहास का पहला वर्ग खंड की आपने शुरुआत की गई। शुरू में, 4 विध्यार्थी से **'शहनाई वादन पाठशाला'** की शरुआत हुई थी। बाद में पुना, महाराष्ट्र तथा अन्य रियासतों से कई विध्यार्थी शहनाई शिक्षा लेने आते थे। शिक्षा कार्य के लिए महाराजा की कृपया तथा पंडित भातखंडे जी के मार्ग दर्शन से पंडित वसईकर जी ने सन् 1918 से 1922 तक चार भागों में **'सनई वादन पाठमाला'** पुस्तक साहित्य का निर्माण किया। इस संगीत साहित्य शहनाई वाद्य पर लिखी भारत की प्रथम पुस्तक मानी जाती है।[6] इन चार पुस्तकों में से प्रथम दो भाग में उस्ताद मौलाबक्ष स्वरांकन पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा आखरी दो पुस्तको में पंडित भातखंडे जी की स्वरांकन पद्धति का प्रयोग किया गया हैं। इन शहनाई साहित्य को चार भागों के संक्षिप्त में वर्णन करने का प्रयास कर रहां हूं।

पुस्तक भाग 1 (एक) की विशेषता

1 Upadhyay rupal (December 2015) ph.d. thesis baroda pre-mordern basis and the mordening project of sir Sayajirao III,dept of History, faculty of arts, The m.s.uni of baroda, p.45 page 274)

2 Upadhyay rupal (December 2025) ph.d. thesis baroda pre-mordern basis and the mordening project of sir Sayajirao III,dept of History, faculty of arts, The m.s.uni of baroda, p. 45 page 274)

3 (शहनाई वाद्य की परंपरा का क्रमिक विकास- कमलेश कुमार आनन्द - 2016 पु. 3)

4 ustad maulabaksh dwara rachit granth sahitya aevam unka sangitik yogdan: ek vishleshanatmak Adhya. Dr. vishvas v. sant performing arts. Baroda (2014)

5 Baroda: A Tale of Two Cities, Curated By Sumati Gangopadhyay. Page 38)

6 इप्सित/दत्तात्रय गायकवाड़/प्रकाशित-निशिगंधा देशपांडे/प्रथम संस्करण/2012/पृष्ठ सं.161,162,

इस 'सनई वादन पाठमाला' भाग-1 पुस्तक में, पुष्ठ क्रमांक 42 से 60 , पाठ 22 से पाठ 33 तक, बारह बंदिशे दि गई है। हर एक राग-रचना को प्रवृत राग, ताल, मात्रा, दोहा (दोहरा), पद, बंदिश की भाषा, में रचना की है, यह सब निम्न सारिणी के माध्यम से दर्शाया गया है।

इस प्रस्तुत सारिणी को देखने से यह ज्ञात होता हैं की इन बंदिशों में त्रिताल, तेवरा, दादरा, इस प्रकार 3 विभिन्न तालों का प्रयोग इस भाग-1 के पुस्तक में किया गया है। इस भाग-1 में 12 बंदिशों को अधिकतर मध्यकाल ले में रचा गया है तथा यमन कल्याण-हमीर-खमाज-शंकराभरण रगों में 2-2 रचनाए तथा भूपाली-छायानट-सैन्धवी-सोहनी , में एक-एक रचनाए रची गई है। इस भाग-1 पाठ में, 12 बंदिश रचनाए दि गई है।[1]

प्रस्तुत बंदिशों में विभिन्न मात्राओ से निर्मित तालों का प्रयोग किया गया है, जिसमें सबसे अधिक 16 ओर सबसे काम 6 मात्राओ के ताल का प्रयोग किया गया है।[2]

पंडित वसईकर जी ने इस पुस्तक भाग-1 में दि गई रचनाओ में अपनी अधभूत सोच का प्रमाण दिया है। जिस समय गुरु-शिष्य परंपरा का प्रचलन, बहुत प्रबल मात्रा में प्रचलित था ओर शहनाई में भी गुरु-शिष्य परंपरा स्वीकृत मानी जाती थी तब शहनाई वाद्य के समूह-शिक्षण पर किसी ने सोचा ही नहीं था। उस समय सर सयाजीराव गायकवाड की शहनाई वाद्य के प्रति सोच ओर लगाव ही, पंडित वसईकर जी को बड़ौदा संस्थान में लाने का मुख्य कारण बनी। इस प्रखर शहनाई वादक ने, बड़ौदा संस्थान में शहनाई का विकास, प्रचार-प्रसार करके, पहले शहनाई वाद्य शिक्षा के लिए वर्ग खंड बनाया ओर इस वर्ग खंड शिक्षा के 'पाठ्यक्रम' के लिए शहनाई की पुस्तक को, चार भागों में प्रकाशीत कराया गया। शहनाई की नई शिक्षा प्रणाली, हर पहलू से समृद्ध बनी ओर शहनाई वाद्य का विकास, प्रचार-प्रसार भी हुवा। पंडित वसईकरजी खुद गुरु शिष्य परंपरा का वाहक थे फिर भी बड़ौदा नरेश की शिक्षा पद्धति का अमल ओर आज्ञा से, आपने शहनाई वाद्य को काफी प्रसिद्ध किया। 'सनई वादन पाठमाला' नाम से चार पुस्तक की रचना करी। इस पुस्तक में पंडित विष्णु नारायण भातखंडेजी का आभार व्यक्त किया हैं। पंडित भातखंडजी ने गायन के उत्कर्ष के लिए अपने ग्रंथ बनाकर संगीत के लोगों पर उपकार किया ओर आपके ग्रंथ ओर पंडित भातखंडेजी ने इस शहनाई पुस्तक में बहुत सहाय की, इस लिए पंडित वसईकर आभारी हे। पंडित वसईकरजी ने भाग एक की प्रस्तावना में लिखा है। दूसरा आभार, बड़ौदा राजकीय संस्कृत पाठशाला के अध्यापक श्रीधरशास्त्री लक्ष्मणशास्त्री पदे ने, भी काफी मदद की थी। तीसरा आभार, प्रो.मौलाबक्ष का किया है,आपने नोटेशन पद्धति प्राप्त कर प्रयोग में लायी उनका का आभार व्यक्त किया है ओर आखिर में यह पुस्तक, श्रीमंत चरण पर अर्पण करके बड़ौदा नरेश सर सयाजीराव का आभार व्यक्त किया है। उपरोक्त आभार विधि, उन खास लोगों की महत्वपूर्ण मदद के लिए लिखी गई है। पंडित जी ने, शहनाई के लिए पाँच पुस्तके लिखी थी पर चार पुस्तकों का प्रकाशन किया गया एसा माना गया है। इस पुस्तक में, शहनाई उपयुक्त बंदीशे दि गई है। इस पुस्तक में, विभिन्न बंदिशों का समावेश किया गया है। विभिन्न बदिशों की ओर देखा जाए तो, देवी-देवता, भगवान के नाम युक्त स्तुति की रचनाए, देखने को मिलती है। देवी देवताओ की स्तुति आराधना, वैद कालिन परंपरा रही है। इस पुस्तक में, शहनाई के लिए सुयोग्य रचनाओ की पसंदगी की गई हे। भाग-1 की दो बंदिशों में, सयाजीराव महाराजा की स्तुति की गई है। पुस्तक-1 के पान 45 तथा पाठ 24 की भूपाली राग में बंदिश **'सयाजी भूपतिश्वरा सुखी करो विषमवदन'** याने है राजाओं के स्वामी, कृपया मुजे प्रसन्न करें, वह कवियों की स्वामिनी हैं, जिन्हों ने हृदय को जीत लिया हे, रात्रिदेवी ही जिन्होंने कृपया को जीत लिया हे,वे बुराई के वां को जला रही हे, तथा बुद्धिमानों का निवास स्थान है। इस बंदिश का हिन्दी में अर्थ निकालता है।

दूसरी बंदिश पुस्तक भाग 1 पान 59 पाठ 33 में राग शंकराभरण में राजा की स्तुति की बंदिश बनाई गई हैं।

'हे देवों के स्वामी हजार दांतों वाली भाग्य की देवी कितनी सुंदर ओर तेजोमय है, भूपा सयाजी धूमकृति सुमति पालिटी जानाहीती राति याहती। श्री कीर्ति बहुत शर्मीली हैं ओर उनका तेज अमरों का स्वामी है।' जिसमे अपने स्वामी याने सयाजी राजा की स्तुति की गई हैं। इस तरह दो बंदिशों में अपने भूपति (नरेश) के नाम रची गई हैं।

पुस्तक भाग 2 (दो) की विशेषता

भाग-2 के पुस्तक में शिक्षा के पाठ देकर साथ में संबल वाद्य का पूर्ण माहिती ओर संबल उपयुक्त ताल के ठेके दिए गए हैं। पुस्तक भाग-2 में प्रो. गायनचार्य पंडित भातखंडेजी का ओर बदौड़े राजकीय संस्कृत पाठशाला के अध्यापक श्रीधरशास्त्री लक्ष्मणशास्त्री पदे की सहाय ओर मदद का

1 ustad maulabaksh dwara rachit granth sahitya aevam unka sangitik yogdan: ek vishleshanatmak Adhya. Dr. vishvas v. sant performing arts. Baroda (2014) p 295

2 ustad maulabaksh dwara rachit granth sahitya aevam unka sangitik yogdan: ek vishleshanatmak Adhya. Dr. vishvas v. sant performing arts. Baroda (204) p 295

आभार व्यक्त किया है। आखिर में प्रो. मौलबक्ष की नॉटेशन पद्धति (स्वरांकन पद्धति) प्रयोग में लाने के लिए आभार व्यक्त किया है। भाग-2 पुस्तक में, दो भागों में लिखा गया हैं। प्रथम भाग में, प्रकरण-1 में अलंकार ओर प्रकरण 2 में, राग के पाठ को दर्शाया गया है। भाग-2 में संबल वाद्य की माहिती तथा संबल वाद्य के ताल के ठेके की माहिती साभार 32 ताल दिए गए हैं। आखिर में शुद्धि पत्र दिए गए है।

पुस्तक भाग 3 (तीन) की विशेषता

इस पुस्तक भाग 3 में 24 विषय में राग तथा अलंकार में 7 विषय दिए गए हैं। इस पुस्तक में ताल चिन्ह ओर स्वरांकन पद्धति से युक्त वंदिशे दि गई है। जिसमें राग शंकराभरण,हमीर,सोहनी,यमन-कल्याण, खमाज, देश, ललित, बिलावल, भैरवी, हिंडोल, धनश्री, श्रीराग, केदार, काफी, बागेश्री,बिहाग, हिदोल, रागों की बंदिशे, हमें प्राप्त होती हैं तथा 7 अलंकार, छंदयुक्त करके, ताल आडाचौताल, सुलफाग, दादरा, झंपा, त्रिपुट, चौताल, केरवा, ताल युक्त दिए गए हे। इस पुस्तक के इस भाग में नॉटेशन चिन्हों का कुलसा किया गया है। भाग 3 ओर भाग 4 में पंडित भातखंडे जी के स्वरांकन पद्धति दि गई है। आखिर में शुद्धि पत्र दिए गए है।

पुस्तक भाग 4 (चार) की विशेषता

इस पुस्तकभाग 4 में 30 विषय पाठ दिए गए है। जिसमें भैरवी, तोड़ी,आसावरी, मध्यमावती सारंग, मारवा, यमनकल्याण, केदार, बिहाग, देश, धनाश्री, काफी, बागेश्री, हिंडोल, परज,तोड़ी,भीमपालसी,तिलंग,मेघमल्हार,सिंधूरा, दरबारी कान्हड़ा, मालकौस, इन रागों के साथ इन बंदिशों में ताल त्रिताल, धमार, चौताल, सुलफाग, झपताल, दादरा, एकताल,धमार आदि तालों का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक में पंडित भातखंडे जी के नोटेशन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक में दिए गए रागों के कॉमल, तीव्, वर्ज स्वर, वादी, संवादी व राग गाने का समय आदि दर्शाया गया है। इस पाठ में रागों के विस्तार भी दर्शाये गए है।

शहनाई साहित्य के प्रयोग से होने वाले फायदे

जिस समय साहित्य का प्रकाशन प्रचलित नहीं था उस समय शहनाई जैसे वाद्य के लिए यह मात्र कल्पना का विषय था, जीसे सर सयाजीराव ने साकार कर दिया।

- साहित्य से रागों का ज्ञान बढ़ता हैं।
- स्वर शुद्धता का विकास
- ताल की समज मजबूत होती हैं।
- अंगुलियों की पकड़ ओर नियंत्रित होती हैं।
- अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती हैं।
- वादन शैली का विकास
- संगीत की परंपरा का ज्ञान
- रचनात्मकता का विकास
- समग्र संगीत ज्ञान में वृद्धि
- तार ओर लय की समज
- वादन कऔषल में वृद्धि
- अनुशासन ओर नियमित अभ्यास की आदत।

बड़ौदा की शहनाई परंपरा

बड़ौदा संस्थान की शिक्षा पद्धति में, "गुरु-शिष्य" परंपरा एवम उस समय की "आधुनिक व्यवस्था" से शिक्षण दिया जाता था। जैसे "गायनशाला" में खुदके बसाये वाद्य, कक्षा अनुसार शिक्षण, कक्षा अनुसार कोर्स, कक्षा अनुसार परीक्षा पद्धति, कक्षा अनुसार पुस्तके, पुस्तक प्रकाशन तथा साल के अंत में विद्यार्थीओ का मंच प्रदर्शन होता था। यह पद्धति, आज से 100 साल पहेले, बड़ौदा संस्थान में मौजूद थी, याने आधुनिक भारत के, विश्व

विद्यालयो जेसी पद्धति 100 साल पहले बड़ौदा संस्थान में प्रचलित थी। बड़ौदा संस्थान में 100 साल पहले, आज की आधुनिक शिक्षा पद्धति से शिक्षण दिया जाता था।

"गुरु-शिष्य" परंपरा तथा बड़ौदा संस्थान दोनों पद्धति से पं. वसईकर जी शहनाई शिक्षण देते थे। सर सायजीराव ने पं. वसईकर को दरबारी संगीतकार का स्थान दिया गया साथ ही "गायनशाला" में शहनाई शिक्षक के रूप में भी नियुक्त किया गया। आपने "गायनशाला" में शहनाई की वर्ग-शिक्षा की शुरुआत की, जो संम्पूर्ण भारत में, यह प्रयोग सर्व-प्रथम था। शहनाई वाद्य काल खंड में केवल, मंदिर ओर सामाजिक उत्सवो पर बजाया जानेवाला वाद्य ही था। उस काल खंड में, शहनाई वाद्य की शिक्षा भी अशक्य थी।

पं. वसईकर के शहनाई कक्ष, 4 विद्यार्थी से शुरू हुवा था। बाद में, यह संख्या बढ़ती चली गई फिर शहनाई शिक्षा "समूह शिक्षा" का भाग बन गई। कई विद्यार्थियो को, कक्षा अनुसार "समूह शिक्षा" दी जाती थी।

"सनई वादन पाठशाला' में भारत की सर्व प्रथम, शहनाई –वादन की वर्ग-शिक्षा देने का श्रेय आपको जाता हें। उस समय जब शहनाई का शिक्षण, कठिन मानाजाता था तब आपने समूह शिक्षा के अंतर्गत "शहनाई वाद्य का शिक्षण दिया। पं. शंकरनाथ गायकवाड भी आपका साथ निभाते थे। आपके शिष्यो में, बड़ौदा के 10 प्रमुख परिवार हें, जिसमे गोविंदराव शिंदे, संत, गायकवाड, वाघमारे, शिर्के, गुरव, कोरडे, सोनवणे, भोसले, क्षीरसागर आदि शहनाई वादक परिवार आज भी, वसइकर की "गुरु-शिष्य" परंपरा अनुसार शहनाई वादन ओर शहनाई का प्रचार-प्रसार करते रहे हे। जिसमें गोविंदराव शिंदे, सनई वादन पाठशाला के आखरी संचालक के तौर पर कार्यभार निभाते रहे थे। भारत देश अंग्रेजों से आजाद होते ही रियासते खत्म हुई ओर उसके बाद शहनाई की इस परंपरा को, पंडित वसईकर के सभी शिष्यों ने आवक का साधन बनाया। बड़ौदा में शहनाई की यह 'घरानेदार परंपरा' वर्तमान समय में भी जारी रखी हैं।

निष्कर्ष

शहनाई की प्रथम पुस्तक "सनई वादन पाठमाला' की रचना सर्वप्रथम बड़ौदा संस्थान में रची गई ऐसा मानाजाता हैं। उस काल खंड में शहनाई जैसे वाद्य पर एक पुस्तक(साहित्य) का होना अकल्पनीय था। इस पुस्तक ने शहनाई शिक्षा में अधारभूत परिवर्तन लाए तथा इक नई शिक्षा पद्धति की नीव रखी गई। साहित्य से शहनाई शिक्षा की नीव मजबूत हुई ओर बड़ौदा में शहनाई की परंपरा की शुरुआत हुई, जो आधुनिक समय में भी प्रवर्तमान है।

चर्चा

बड़ौदा संस्थान को हम चर्चा पद्धति का प्रथम स्रोत मानते है, जिस ने शहनाई साहित्य तथा शहनाई परंपरा का विकास किया। दूसरी चर्चा हम शहनाई के 4 भाग में प्रकाशित पुस्तक 'सनई वादन पाठमाला' की करेंगे। जिसमें शहनाई वाद्य को लोक वाद्य के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत के प्रवाह में स्थान दिलाने में महत्व पुर्ण भूमिका निभाई है। शहनाई साहित्य के परिणाम स्वरूप शहनाई वर्ग-खंड, वर्ग-शिक्षा, परीक्षा पद्धति, परिणाम पत्रिका, स्वरांकन, शहनाई साहित्य आदि रूपों को उजागर करने में महत्वपूर्ण स्थान निभाया है। तीसरी चर्चा स्वरूप जब भारत देश आजाद हुआ ओर बड़ौदा का देश में विलय हुआ तब बड़ौदा में शहनाई के विकास में कमी आई। परंतु शहनाई परंपरा और शहनाई वादन कला आज भी संरक्षित है। आज भी गुजरात राज्य के बड़ौदा में सबसे ज्यादा शहनाई वादक पाए जाते है।

संदर्भ ग्रंथ

Upadhyay rupal (December 2015) ph.d. thesis baroda pre-mordern basis and the morderning project of sir Sayajirao III,dept of History, faculty of arts, The m.s.uni of baroda

Upadhyay rupal (December 2015) ph.d. thesis baroda pre-mordern basis and the morderning project of sir Sayajirao III,dept of History, faculty of arts, The m.s.uni of baroda

शहनाई वाद्य की परंपरा का क्रमिक विकास- कमलेश कुमार आनन्द - 2016

ustad maulabaksh dwara rachit granth sahitya aevam unka sangitik yogdan: ek vishleshanatmak Adhya. Dr. vishvas v. sant performing arts. Baroda (2014)

Baroda: A Tale of Two Cities, Curated By Sumati Gangopadhyay.

इप्सित/दत्तात्रय गायकवाड़/प्रकाशित-निशिगंधा देशपांडे/प्रथम संस्करण/2012/पृष्ठ सं.161,162 ,